जाति प्रथा संबन्धी डॉ० भीमराव अम्बेडकर के विचार का एक अध्ययन: झारखण्ड राज्य के संदर्भ में

पीएच० डी० पंजीयन हेतु प्रस्तावित शोध–प्रबंध का सार

स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग

सामाजिक विज्ञान संकाय

बिनोद बिहारी महतों कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद, (झारखंड)

शोध निदेशक:

डॉ० अमूल्य सुमन बेक

सहायक प्रोफेसर

स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग

बिनोद बिहारी महतों कोयलांचल

विश्वविद्यालय, धनबाद, (झारखंड)

शोधार्थी:

ललिता कुमारी

स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान

बिनोद बिहारी महतों कोयलांचल

विश्वविद्यालय धनबाद, (झारखंड)

जाति प्रथा संबन्धी डॉ० भीमराव अम्बेडकर के विचार का एक अध्ययनः झारखण्ड राज्य के संदर्भ में

भूमिका

जाति प्रथा एक सामाजिक कुरीति है जो प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में विद्यमान है। मनुष्य जब जन्म लेता है तो वह स्वतंत्र होता है परंतु उसे धीरे– धीरे सामाजिक कुरीतियों द्वारा जकड़ लिया जाता है। तथा वह जिस जाति में जन्म लेता है वह उसी जाति का सदस्य कहा जाता है। वह अपने जाति को बदल नहीं सकता है। तथा उसे जीवनभर उसी जाति में रहना पड़ता है। चाहे वे कितना ही पढ़– लिख ले या धनी व्यक्ति बन जाए वह व्यक्ति उसी जाति में रहेगा, जिसमें उनका जन्म हुआ है। तथा सभी जाति के कुछ नियम, परम्परा तथा कानून होता है जिसे व्यक्ति को पालन करना पड़ता है। यदि व्यक्ति इस सामाजिक नियमों का पालन नहीं करता है तो समाज द्वारा उस व्यक्ति का बहिष्कार किया जाता है।

भारतीय समाज में अनेक प्रकार की जातियां होती हैं। लेकिन जाति के मुख्य चार प्रकार होता है– 1. ब्राह्मण 2. क्षत्रिय 3. वैश्य और 4. शूद्र। यह भारतीय समाज चार जातियां में बाँटा हुआ है तथा सभी वर्ग के लोग अपनी जाति के अनुसार कार्य करते हैं। जैसेः–

1. **ब्राह्मण** – उनका कार्य शिक्षण, कर्मकाण्ड, धार्मिक एंव आध्यात्मिक था।
2. **क्षत्रिय** – देश की रक्षा करना तथा शासन चलाना।
3. **वैश्य** – उनका कार्य व्यापार करना।
4. **शूद्र**– यह मजदूर का कार्य करते थे।

पहले जाति प्रथा प्रचलित नहीं थी, परन्तु कुछ स्वार्थी लोगों ने जो ऊँचे स्तर के थे। उन्होंने कमजोर वर्ग के लोगों से जबर्दस्ती काम करवाना शुरु कर दिया। तथा वे लोग ऊँचे जाति के होने के कारण निम्न जाति के लोगों से भेदभाव एंव घृणा करने लगे। इस तरह से निम्न जाति के लोगों को शिक्षा से वंचित रखा गया तथा निम्न जाति के लोगों को ऊँचे जाति के बराबरी में घर बनाने, अच्छे कपड़े पहनने, अच्छा खाने पीने तथा आभूषण पहनने की स्वतंत्रता नहीं थी। यहाँ तक कि उच्च जातियां द्वारा उपयोग किए जाने वाले कुएँ तथा तालाब के पानी का प्रयोग तथा मंदिरों में प्रवेश की अनुमति निम्न जातियां को नहीं थी। उच्च जाति के छात्रों को उनकी छाया तथा स्पर्श से दूषित होने से बचाने के लिए निम्न जाति के बच्चों को स्कूलों में जाने की अनुमति नहीं थी। जिससे उन्हें शिक्षा प्राप्त करने से रोका गया तथा उन्हें उच्च जाति के सदस्यों के समान नहीं माना जाता था । उन्हें ऊँचे जाति के सदस्यों के साथ भोजन करने तथा मेलजोल बढ़ाने की अनुमति नहीं थी।

भारतीय संस्कृति में व्यक्ति की पहचान उसकी जाति से होती है जो उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा भी निर्धारित करती है तथा भारतीय जाति संरचना समाज को कई छोटे समूहों में विभाजित करती है जिन्हें जातियां कहा जाता है। प्रत्येक जाति समूह की अपनी स्वायत्तता होती है तथा प्रत्येक जातियां के कुछ निश्चित व्यवसाय होता है। तथा जाति के सदस्य अपने पैतृक व्यवसाय को स्वीकार करते हैं। उन्हें छोड़ना उचित नहीं समझते हैं। कोई भी पेशा चाहे वह व्यक्ति के जरुरतों को पूरा करता है या नहीं, चाहे उसे मानसिक संतुष्टि हो या नहीं, उसे पारम्परिक पेशा को अपनाना पड़ता है। आम तौर पर लोग अपने पुश्तैनी पेशा को अपनाना ही उचित समझते हैं। पेशा भी उच्च– नीच के आधार पर निर्धारित किये गये हैं, यदि कोई ऊँची जाति का व्यक्ति निम्न जाति का पेशा अपनाता है तो उसे जातिगत विरोध किया जाता है इसी तरह जब निम्न जाति का कोई सदस्य ऊँची जाति का पेशा अपनाता है तो उसका भी विरोध किया जाता है।

ऋग्वेद के पुरुषसूक्त के अनुसार बाह्मण की उत्पत्ति ब्राह्म (भगवान) के मुख से, क्षत्रिय की बाहु से, वैश्य को जांघ से तथा शूद्र को पैरों से बताई गई है। प्रत्येक जाति का एक परम्परागत (वंशानुगत) निश्चित व्यवसाय होता था जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी हस्तांतरित होता रहता था। जाति प्रथा के कारण लड़का–लड़की को अपनी ही जाति में शादी करना पड़ता हैं। दूसरे जाति में शादी करने से स्वीकार नहीं किया जाता है। समाज के द्वारा उस व्यक्ति का विरोध किया जाता हैं। जाति प्रथा के कारण लोग अपने ही जाति के नेता को चुनना पसंद करते हैं। क्योंकि वे लोगों के समस्या को सुनते है और उनका समाधान करने की कोशिश करते हैं। दूसरे जाति के नेता लोगों की समस्या नहीं सुनते हैं।

डॉ० अम्बेडकर एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जिसमें उच्च–नीच एंव छुआछूत जैसी किसी प्रकार का भेदभाव न हो। और सभी को कानूनी रूप से समान अधिकार मिले। उन्होंने यह भी कहा था कि समाज के सभी वर्गों में बेहतर सामंजस्य स्थापित करने के लिए शिक्षा, राजनीतिक शक्ति एंव आर्थिक स्थिति को ठीक करना होगा जो आज भी यह उपयोगी लग रहा है। अतः अम्बेडकर का स्वप्न अभी तक पूरा नहीं हुआ है। अभी भी समाज में उच्च–नीच एंव छुआछूत की भावना दिखाई देती है। लोगों को शिक्षा एंव स्वच्छता के प्रति जागरूक करने की जरूरत है तभी एक कल्याणकारी समाज का निर्माण होगा।
डॉ० भीमराव अम्बेडकर जानते थे कि अछूतों की वर्तमान स्थिति के लिए स्वयं अछूत वर्ग ही उत्तरदायी है। अतः उन्होंने इस बात पर बल दिया कि अछूतों द्वारा अपनी बुरी आदतों और हीनता की भावना का त्याग कर आत्मसम्मानपूर्ण जीवन की ओर प्रवृत्त होना चाहिए। उन्होंने अपने पत्रों में लिखकर और अपने भाषणों में इस बात पर बल दिया कि अछूतों को माँगना छोड़ देना चाहिए, झूठ बोलना बंद कर देना चाहिए, मुर्दा जानवर खाना छोड़ देना चाहिए तथा इन सबके अतिरिक्त हीनता की भावना का त्याग कर श्रेष्ठ जीवन की ओर प्रवृत्त होना चाहिए। तथा अछूतों को स्वतंत्रता, समानता और स्वाभिमान से जीवन बिताने की इच्छा होनी चाहिए और इसके लिए उनके सुझाव थे– (1) अछूत संगठित हो (2) शिक्षित हो और (3) अत्याचार

के विरुद्ध संघर्ष करे। उन्होनें अछूतों को सरकारी नौकरियों में जाने, जंगल तथा खेती की भूमि प्राप्त करने की शिक्षा दी। उन्होंने उपसंहार में कहा, ''यदि महार अपने बच्चों को स्वयं के मुकाबले में अच्छी दिशा में देखने की इच्छा नहीं रखते तो एक मनुष्य व एक जानवर में कोई अन्तर नहीं होगा।

जाति प्रथा की अर्थ एवं परिभाषा

जाति (Caste) – शब्द की उत्पत्ति पूर्तगाली भाषा के कास्टा शब्द (casta) से हुई है। जिसका अर्थ है – नस्ल, प्रजाति अथवा प्रजातिय भेद।

जाति का वास्तविक अर्थ

एक सामाजिक समूह के रुप में लिया जाता है यह एक ऐसा समूह है जिसकी सदस्यता जन्म से निर्धारित होता है।

जे० एच० हट्टन के अनुसार –

''जाति एक ऐसी प्रथा है, जिसके अन्तर्गत एक समाज अनेक आत्म केन्द्रीत एवं एक–दूसरे से पूर्णतः पृथक इकाइयों में विभाजित रहता है। इन इकाइयों के बीच पारस्परिक संबंध उच्च – नीच के आधार पर सांस्कृतिक रुप से निर्धारित होता है।''

केतकर के अनुसार –

''जाति एक ऐसा सामाजिक समूह है जिसकी सदस्यता केवल उन व्यक्तियों तक सीमित है जो सदस्यों से जन्म लेते हैं और इस प्रकार से पैदा हुए व्यक्ति ही इसमें सम्मिलित होते हैं। ये सदस्य एक कठोर सामाजिक नियम द्वारा समूह के बाहर विवाह करने से रोक दिये जाते है।''

शोध प्रबंध की साहित्य समीक्षा–

(1) अम्बेडकर बी० आर० (1917) ने अपनी पुस्तक **"भारत में जातियां"** के अन्तर्गत भारत में जातियों की उत्पत्ति, गठन एंव विकास पर प्रकाश डाला गया है। उनके दृष्टि में जाति एक ऐसा परिबद्ध वर्ग है जो अपने तक सीमित रहता है।

(2) अम्बेडकर बी० आर० (1936) **"जाति का विनाश"**– को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करवा दिया ताकि अधिक से अधिक लोग इसके बारें में जान सके। यह पुस्तक छोटी सी है, लेकिन बहुत ही गंभीर है। इस पुस्तक में डॉ० अम्बेडकर ने जाति प्रथा के आधार पर उनके उन्मूलन के संबंध में गंभीर चर्चा की है।

(3) गेंवा के० आर०, भाटिय आरती, (2012) ने अपनी पुस्तक “**सामाजिक दर्शन**” में लिखा है कि अम्बेडकर का संपूर्ण जीवन भारतीय समाज के सुधार के लिए समर्पित था। अस्पृश्यों तथा दलित के वे मसीहा थे।

(4) गजभिये प्रभाकर , अम्बेडकर बी० आर० (2023) लेखक ने अपनी पुस्तक **“पूना समझोता”** में दलित वर्गों और ऊँची जाति के हिन्दू नेताओं की ओर से चुनावी सीटों के आरक्षण पर महात्मा गाँधी और डॉ० बी० आर० अम्बेडकर के बीच एक समझोता हुआ था। जो इस पुस्तक में विस्तार से चर्चा की गई है।

(5) अम्बेडकर बी० आर० (2023) ने अपनी पुस्तक **“शूद्र कौन थे?”** में शूद्र वर्ण की उत्पत्ति की चर्चा की है। अम्बेडकर ने इस पुस्तक को भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता और जाति सुधारक ज्योतिराव फुले को समर्पित किया है। अम्बेडकर हिंदू धार्मिक ग्रंथों जैसे कि ऋग्वेद, महाभारत और अन्य वैदिक धर्मग्रंथों का रिफेंस देते हुए जाति व्यवस्था की कई बातों को उल्लेखित किया है। उनके अनुसार शूद्र मूल रूप से आर्य थे और क्षत्रिय का हिस्सा थे। अम्बेडकर ने इस किताब में आर्यन जाति के सिद्धातों पर भी चर्चा की है।

(6) अम्बेडकर बी० आर० (1957) “**बुद्ध और उनका धाम्म**” – अम्बेडकर के इस पुस्तक में बुद्ध के जीवन और बौद्ध धर्म पर प्रकाश डालती है। यह अम्बेडकर की अंतिम किताब थी। इस पुस्तक में उनके द्वारा उठाए गए बुद्ध से जुड़े विचार विमर्श, चार आर्य सत्य, आत्मा के सिद्धांत, कर्म ,पुनर्जन्म और भिक्षु बनने की कहानी है।

(7) ठाकुर रघु (2023) ने अपनी पुस्तक **“मनोहर राम लोहिया जाति प्रथा”** – में डॉ० लोहिया के जाति प्रथा पर किये गये विचारों तथा इसके उन्मूल के कार्यक्रमों की एक झलक मिलती है। लोहिया के चुनिंदा दस्तावेज़ों को शामिल किया गया है।

(8) चौधरी प्रताप (2021) ने अपनी पुस्तक “**डॉ० अम्बेडकर और दलित चेतना**” **में** डॉ० अम्बेडकर के द्वारा दलित समाज के सुधार हेतु तथा उन्हें समाज में उचित सम्मान दिलाने हेतु किये गये संघर्ष का विवेचन किया गया है। इसके अतिरिक्त हिन्दू जाति व्यवस्था में खामियों के कारण इसे खत्म करने के लिये उन्होंने सैद्धांतिक तथा व्यवहारिक स्तर पर जो व्यापक प्रयास किये उनका भी अध्ययन किया गया है।

(9) चौधरी कुमार अनिल, परवीन शैला, कुरील भारती (2017) ने अपनी पुस्तक “**बी० आर० अम्बेडकर का दृष्टिकोण एवं जाति प्रथा**” में डॉ० अम्बेडकर के जाति व्यवस्था एवं इससे निकलने के तरीकों पर विश्लेषण के रूप में संकलित शोध–पत्रों का एक सदंर्भ है, इसमें प्राथमिक संकलित तथ्यों पर आधारित शोध पत्र भी तथा अम्बेडकर के विचारों पर विश्लेषण वाले लेखों को स्थान दिया गया है।

(10) कुमार अरूण (2015) ने अपनी पुस्तक **"आधुनिक शिक्षा एवं दलित"** में दलित वर्ग की शैक्षणिक दशा का सटीक उल्लेख किया गया है। शिक्षा का समग्रता से अवलोकन करने के लिए इसके सहायक पहलू–सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, स्वास्थ्य इत्यादि के परिप्रेक्ष्य का परीक्षण करना आवश्यक है। इसलिए इस पुस्तक में दलित वर्ग के इन सभी पहलुओं के विशद व्याख्या की गई है।

शोध प्रबंध के अध्ययन का महत्वः

भारतीय समाज में जाति प्रथा सदियों पूर्व से चली आ रही है। जिसके कारण लोगों को अनेक समस्याओं का समाना करना पड़ता है। डॉ० भीमराव अम्बेडकर का विचार था कि जाति प्रथा को समाप्त करने के लिए लोगों को आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, शिक्षा तथा स्वच्छता के प्रति जागरूक होने की जरूरत है। तभी जाति प्रथा को जड़ से खत्म किया जा सकता हैं। वे एक कल्याणकारी समाज की कल्पना करते थे। उन्होंने लोगों को अपनी स्थिति में सुधार करने को कहा। इस शोध कार्य का महत्व इसलिए है कि उनके विचारों का अध्ययन करके जाति प्रथा को मिटा कर एक कल्याणकारी समाज का निर्माण करने में अहम भूमिका निभा सकते हैं।

शोध प्रबंध का उद्देश्य –

1. भारतीय समाज के जाति प्रथा के बारे में जानकारी प्राप्त करना
2. डॉ० भीमराव अम्बेडकर के विचारों को जानना एवं सामाजिक बाधाओं को दूर करना
3. शहरीकरण एवं औद्योगिकीकरण ने कैसे सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाया
4. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के साधनों ने सामाजिक परिवर्तन में क्या भूमिका निभाई

शोध परिकल्पना –

1. भारतीय समाज में जाति प्रथा सदियों से चली आ रही है
2. डॉ० भीमराव अम्बेडकर के विचारों से जाति प्रथा में सुधार हुआ हैं
3. शहरीकरण एवं औद्योगिकीकरण से जाति प्रथा में परिवर्तन आया हैं
4. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के साधनों से सामाजिक परिवर्तन हुई हैं

शोध प्रबंध की अध्ययन विधि –

ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक, प्रश्नावली तथा अनुभवात्मक विधि

(i) प्राथमिक स्रोत–

अवलोकन, साक्षात्कार और प्रश्नावली

(ii) द्वितीय स्रोत

प्रकाशित प्रलेख, शोधकर्त्ताओं का प्रकाशन तथा व्यक्तिगत प्रलेख

शोध प्रबंध की अध्यायीकरण –

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय– भारत के जाति प्रथा की अवधारणा एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

द्वितीय अध्याय– जाति प्रथा संबंधी भीमराव अम्बेडकर के विचार

तृतीय अध्याय– भूमंडलीकरण एवं जाति प्रथा का प्रभाव

चतुर्थ अध्याय– सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के साधनों से वर्तमान में जाति प्रथा का बदलता स्वरूप

पंचम अध्याय– झारखण्ड की जाति प्रथा पर अम्बेडकर के विचारों का प्रभाव

निष्कर्ष एंव सुझाव

संदर्भ ग्रंथ सूची

- दास, पी० (2009). डॉ० भीमराव अम्बेडकर का मानववाद. नई दिल्लीः कला प्रकाशन.
- कुमार, डी० (2009). मैं अम्बेडकर बोल रहाँ हूँ . दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.
- जाटव, डी० आर० (2015). डॉ० अम्बेडकर और मार्क्सवाद.
- मिश्रा, अ० (2016). डॉ० बी. आर. अम्बेडकर का एक अध्ययन. अंकित प्रकाशन.
- अम्बेडकर, बी० आर० (2018). रुपये की समस्या उद्भव और समाधान. सम्यक प्रकासन.
- गजभिये, प्र० (2022). भीमराव अम्बेडकर जीवन चरित मेरी कहानी मेरी जुबानी. सुधीर प्रकाशन.
- सिंह, श० (2018). डॉ० भीमराव अम्बेडकर का जीवन और मिशन. सिद्धांत बुक्स.
- मकवाणा, कि० (2019). डॉ० भीमराव अम्बेडकर का जीवन दर्शन. नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.
- अम्बेडकर, बी० आर० (2016). बुद्ध और उनका धम्म. बुद्धम पब्लिशर्स.
- वासनिक, वि० कुमार०, अम्बेडकर बी० आर० (2022). बाबा साहेब डॉ० अम्बेडकर और गोलमेज सम्मेलन.सम्यक प्रकाशन.
- दत्त, यो०, जाफ्रलो, क्रि. (2019). भीमराव अम्बेडकर,एक जीवनी के अंशः जाति उम्मूलन का संघर्ष एवं विशलेषण. राजकमल प्रकाशन.
- भाटिया, आ०, गेनवा, के० आर० (2012). डॉ० भीमराव का अम्बेडकर सामाजिक दर्शन. जोधपुरः राजस्थानी ग्रंथागार.
- गजभिए, अ०, फड़के, य० दि० डॉ० भीमराव अम्बेडकर का कालाराम मंदिर सत्याग्रह.सम्यक प्रकाशन.
- अम्बेडकर, बी० आर० (2022). भारत का संविधान. प्रभात प्रकाशन.
- गौतम, एस० एस० (2019). डॉ० अम्बेडकर और दलित महिला. सिद्धार्थ बुक्स.
- अज्ञात, सु० (2013). बुद्धधम्म, बुद्धिवाद व अम्बेडकर. सम्यक प्रकाशन.
- राजू , अ० (2022). गाँधी और अम्बेडकर. नई दिल्लीः डायमंड बुक्स.
- सिंह, शु० (2020). डॉ0 भीमराव अम्बेडकर (संघर्ष गाथा). वाराणसी (उ0प्र0)ः आदित्य बुक सेंटर.
- अम्बेडकर, बी० आर० (2023). डॉ0 भीमराव अम्बेडकर (भारत में जातिप्रथा). ब्लब प्रकाशन.
- परिहार, एम० एल०, अम्बेडकर, बी० आर० (2022). जात–पात का विनाश. जयपुर : बुद्धम् पब्लिशर्स.

- अम्बेडकर, बी० आर० (2023). शूद्रों का इतिहास. जयपुर : हाईटेक डिजिटल प्लेट्स इंडिया प्रा० लि०.
- गजभिय, प्र०, अम्बेडकर, बी० आर० (2023). पूना समझौता. सुधीर प्रकाशन.
- खालसा, म० सि० (2013). डॉ0 अम्बेडकर और दलित चेतना. रावत प्रकाशन.
- जगरवाल, सु० (2022). डॉ0 अम्बेडकर का बहुमुखी विचार दर्शन. दिल्लीः सिद्धार्थ बुक्स.
- फरकाड़े, श्रा०, गजभिय, प्र० (2022). डॉ0 बाबासाहेब अम्बेडकर ने मनुस्मृति क्यों जलाई?.सुधीर प्रकाशन.
- चन्देल, लो० कु० (2013). डॉ0 अम्बेडकर और लोहिया का लोकतंत्र.राजस्थानः हिन्दी ग्रंथ अकादमी.
- चौधरी, अ० कु० (2017). डॉ0 अम्बेडकर का दृष्टिकोण एवं जाति प्रथा. वाराणासीः भारती प्रकाशन.
- सिन्हा, अ० कु० (2016). झारखण्ड राजनीति और हालात. नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.
- ठाकुर, र० (2023). राम मनोहर लोहिया जाति प्रथा. दिल्लीः बुक्स प्रकाशन.
- प्रभात खबर (2023). झारखण्ड के सिल्ली के नवाडीह गाँव के लोग नहीं उभर पाये छुआछूत से, सभी कुएँ ऊँची जातियों के लिए, दलित नहीं भर सकते पानीः राँची प्रकाशन.
- TV9 भारतवर्ष (2022). झारखण्ड के गिरिडीह जिले में बहन ने दूसरी जाति के युवक से की शादी, नाराज भाई ने लाठी–डंडे से पीट–पीटकर जीजा को मार डाला.
- जागरण न्यूज (2022). झारखण्ड के लातेहार जिले के राजकीय मध्य विद्यालय के बच्चों में छुआछूत हावी, दूसरी रसोईया ने बनाया खाना तो नहीं खाया मिड–डे मील.

****